अध्याय-सात

तकषी शिवशंकर पिल्लै

तकषी शिवशंकर पिल्लै के जनम सन् 1914 ई. में केरल के तकषी में भइल रहे। शुरू में वकालत के परीक्षा पास कके वकालत कइलीं आ किसानों के रूप में काम कइलीं।

आधुनिक मलयाली साहित्य में इनकर स्थान अप्रतिम बा । कहल जाला कि मलयालम में आधुनिक कहानी के प्रवर्त्तक बाड़न । इनका कहानी के सबसे बड़ा खूबी बा सरल आ सुस्पष्ट भाषा। इनका कहानी में सामान्य तबका के आदमी के जिनिगी के दुख दर्द आशा-निराशा आ ओकरा बेचैनी के चित्रण बड़ा बारीक ढंग से कइल गइल बा । इहे कारण इनका कहानियन के सामान्य जन के बीचे प्रतिष्ठित होखे के । ई प्रगतिशील आंदोलन से जुड़के लोगन खातिर काम कइले आ मशाल के रूप में अग्रणी भूमिका निभवले ।

साहित्य के हर विधा में काम करेवाला तकषी जी के करीब पचास-साठ गो किताब प्रकाशित होके प्रशंसित हो चुकल बा । साहित्य अकादमी से पुरस्कृत इहाँ के उपन्यास 'चेम्मीन' के अनुवाद भारत आ विदेश के कईगो भाषा में कइल गइल बा । एकरा अलावे कई गो आउर प्रतिष्ठित पुरस्कार इनका मिल चुकल बा ।

कहानी के अनुवाद पाठ्य-पुस्तक निर्माण कार्यशाला में कईल गइल बा ।

विषय-प्रवेश

'मत्तन के कहानी' के मूल कथा सामाजिक विषमता आ शोषक शोषित के कार्य व्यवहार आ सामान्यजन के उत्पीड़न के बा । एह में एगो कमजोर वर्ग के गरीब आदमी मत्तन के कथ्य बा जवन आपन पेट काट के पइसा जमींदार चाको किहाँ जमा करत बा, आ अपना बेटी के बियाह के बेटा जब ऊ पइसा माँगत बा तब जमींदार इंकार कर जात बा, आ मत्तन के हत्या करवा देत बा। एह कहानीं में केरल के ग्रामीण जीवन के वैषम्य उभर के सामने आइल बा । जे भोजपुरी भाषा-भाषी इलाकनो के साँच बा, आ एहमें एहीजा के शोषण-उत्पीड़न के झलक मिलत बा ।

कहानी

मत्तन के कहानी

"माई, बाबूजी आजो ना अइहें का ?'' प्रार्थना के बीचे त्रेसा अपना माई से पूछलस।

प्रार्थना करत खा मारिया के ध्यान घाट पर से आवत नाव के आवाज पर लागल रहे। ऊ कहलस "अइहें बेटी, आजे अइहें ।''

मारिया आह दिन खातिर प्रार्थना कइली आ सामने परोसल भोजन के प्रति आभार जतवली। त्रेसा आंसही देखली । हाथ फइला के माथा एक ओर झुका के, कपड़ा तनीसा सरका के, खाली पेट, अधा खुलल ओठ, अन्हुआइल आँखन से खंभा के उपर लटकत आकृति के आँख टिका के देखलस । टिमटिमात दीया के मद्धिम अँजोर में आकृति के ओठ हिलत लउकत । बुझाइल जे भगवान कुछ कहल चाहत होखस । "रक्षा करीं भगवन ।'' फेर उहे प्रार्थना ! त्रेसा कुछ ना बोलल ।

बगल में सूतल रोसा कुछ बड़बड़ा उठल । त्रेसा फेर पूछलस, "बाबूजी ना अइहें त हमनी खाना कइसे खाइब ?''

"खाइल जाई बेटी ।''

दीया बुतायेवाला बा । मारिया उठके एक बेर दीया हिला के देखली । रात गहिरा गइल रहे। बरखा बरखे लागल रहे । हवा तेज हो गइल रहे ।

ऊ चुपे-चुपे प्रार्थना कइलस । ऊ प्रार्थना अब तक अबूझ रहे । चार-पाँच फीट गहिर पानी आ नदी के बहाव के रोक के जाये के बा । अइसे पहाड़ के तलहटी तक गइल बाड़ें। झील के कूल-किनारा के पता ना चले । एकदम सून-सनाटा, कहीं चिरई के पूतो ना लउके जे मोका प मदद कर सके । नदी में गबरो खूबे बा । हाथ के बाँस अगर टूट जाई तब ? -ई विचार मन में आवते ऊ ईसा के चरण से लिपट गइल । आखिर ओकरा दू गो लइकियो बाड़ीस ।

त्रेसा फेरू पूछलस–"बाबूजी एह बरसात में कहाँ होइहें । बरखा में भींजला से बुखार ना लागी का ?"

मारिया आँख खोललली । ओकरो में उहे कमी बा । दीया अब बुता जाई । घाट पर से नाँव के आवाज सुने के आस में दूनो भाई-बेटी बाहर का ओर देखली–घुप्प अन्हरिया रहे आपन हाथ तकले आ देखाई देत रहे ।

"माई, बाबूजी !"

"बेटी त्रेसा ।"

बहरी केहू बोलावत बा ।

"रानी दीया देखाव त बेटी ।"

"दीया बुता गइल, बाबूजी ।"

त्रेसा दीया लेके दोबारा दुआर प आइल । बकिर फेरू दीया बुता गइल ।

मत्तन ओसारा में आइले । उनका हाथ में एगो छड़ी आ एगो बड़ पोटली रहे ।

"दीया देखाव बेटी ।"

"आग नइखे, बाबूजी ।"

त्रेसा अंहरिया में बाप के गला मिले खातिर टकटोरत बाकिर बाबू जी के कहीं पता ना रहे। रोसो जाग गइल रहे । उहो बाबू के आवाज देलस आ उनका के पकड़े में ओकर माथा त्रेसा के ओठ से टकरा गइल ।

"बोरसियो में आग नइखे का ?" मत्तन पूछले ।

आज घर में आगो ना जरल । ई सोच के मत्तन के दिमाग गरम हो गइल । आज बोरसियो ना जरल ।

"आज लइको कुछ ना खइले होइहें स ?"

मत्तन बरखा से भींजल रहे । पहिले रोसा के ऊ उठा के गोदी में ले लेहले ।

"एकनी के थोरे आ साँझ के धिया देल रहीं । रात खातिर कुछुओ न रहे ।" मारिया कहलस "पड़ोसिया से लइकन के बहुत कुछ मिल गइल रहे । आज कवनो काम ना हो सकल भारहो से बरखा बरखत बा ।"

"तब त तूहूँ कुछ ना खइले होइबू ?" मत्तन अपना मेहरारू से पूछले ।

"ना ।"

बेटी के नीचे बइठा के मत्तन आग ले आवे चल गइल । ओह दिन आधा रात खा घर में दीया जरल बाकिर ओकरा बादो केहू सूतल ना । दूनो बतिआवत रहले स ।

मरद कहलस "तीन रुपआ देलीं । ओकरा बाद मोटर प चढ़के एरणाकुलम चल गइलीं।"

"तब हई चार आना ?"

"पाले में कॉफी पीये खातिर देल रहीं । दलिया ना रहे । हम कॉफी ना पीयले रहीं।"

"चाउर कहाँ स...।"

"राह खर्च में से बचा लेले रहीं ।"

"कतना बा ?"

"दू प्रउवा ।"

मारिया मत्तन के गइला के बाद सब हाल कह गइली । दू दिन पत्तल बनावे मट्टकाट्ट गइलीं । नौ आना मिलल । एक दिन तरभुरम में चाउर ठीक कइली । एक दिन चार गो नरियर बेचलीं । बाकिर आज पानी बरिसत रहे एह से बाहर ना निकलली ।

"हम लइकन के भूखे नइखीं रखले ।"

"बाकिर तूँ त भूखे रहलू ।"

फेर चुप्पी । ई चुप्पी सुतला के ना चिंता के रहे । ओह चुप्पी से कबो आवाज उठ सकत रहे ।

"अब केतना होई ?"

"चउदह ।"

"का ई सब पइसा देवे जात बाड़ ।"

"ना त अउर का । एक साल में अतन हो सकल ! ओकरो उमिर त आठ बरिस के हो गइल। पाँच-सात साल अउर बाकी बा ।"

कुछ देर चुप रहला के बाद मत्तन कहलस–"दस पइसा जादहीं दे देब त अच्छा रही, वरो अच्छा मिली । हँ, हमरा तनी कष्ट जादे सहे के पड़ी ।" मारिया सहमत हो गइल। आगे दिन के बारे में सोचत-सोचत ऊ दूनों सूत गइले स । ऊ दूनो सपना देखत रहले स.... बेटी के शादी.. ... ओकर घर.... ।

भोर होते मत्तन अरच्चरा पहुँच गइल । तब ले चाक्को से मिले खातिर चार-पाँच लोग आ गइल रहे ।

चाक्को ओहिजा के धनी आदमी बाड़न । उनका पाले बहुत सा खेत बा जमीन-जायदाद बा,।

उनका धन के बारे में कईगो खिस्सा लोक में प्रचलित बा । उनका में घमंड ना सहानुभूति बा । ऊ हरमेस मीठ बोलेलन । उनका मुँह से दोसरा खातिर कबो खराब बात ना निकले । भगवत-भक्ति के बारे में त कुछ कहे के नइखे । हर एतवार के बि ना नागा कइले गिरिजाघर जालन । ईश्वर के भुला के कुछो ना करस । अबहीं हाले में गिरिजाघर खातिर एक हजार रोपेया दान देलन हा ।

चाक्को नींद से उठके बहरी अइले त मत्तन के देखले ।

"कब अइले, मत्तन"

"काल्ह रात के ।"

ABDIEL SOLUTIONS ABSOL PATNA

मत्तन के चाक्को से एकांता में बात करे के रहे, बाकिर ओहिजा चार-पाँच आदमी बइठल रहे। मिले खातिर त लोग आवत-जात रहे । मत्तन के कष्ट भइल ।

चाक्कोचन के बेटी उनका के कॉफी पीये खातिर बोलबलस । सब आदमी के बइठत छोड़के ऊ कॉफी पीये चल गइल । साथ में मत्तनों रहे । थोड़े देर में मत्तन बहरी आ गइल। ओकर चेहरा खिलल रहे । ऊ तीन रोपेया चाक्को के सऊँप देले रहे । एह तरह अबतक त्रेसा के बियाह खातिर चउदह रोपेया एकट्ठा कके ओकरा संतोष भेटाइल ।

चाक्को के मेहरारू मत्तन के लकड़ी काटे खातिर बोलवली । लकड़ी कटला के बाद चाक्को

अपना काम खातिर बोलवलस । खेत में जहाँ हल जोतत बा, चाक्को के ओहिजा जाये के बाद । नाव खेवे के काम मत्तन के बा ।

नाव प जात खानी मत्तन चाक्को के खूब गुनगान कइलस । सकुँसे पाले के लोग चाक्कोच्चन के जानला ।

मत्तन चाक्को के छोटी खातिर एगो घर देखले बा । बहुते भनिक लाग बा । बाग-बगइचा बा।

"मोचल जाइ"

"मोचल जाइ", चाक्को जबाब देले ।

खेत प पहुँचला के बाद गायन के चरी देबे के काम मत्तन के जिम्मे क देल गइल। चरी देला के बाद नारियल के पत्ता ठीक कइलस । फरू दस मन चाउर लेबे के बा, अइसन बहुते काम रह । एही में साँझ हो गइल ।

मत्तन काम करत-करत अतना थाक गइल रहे कि खड़ा ना भइल जात रहे । रसोईघर के पास जाके क गरम पानी माँगलस । पानी गरम ना भइल रहे । चाउर खदकत रहे। ओही घड़ी चाक्को ओहीजा पहुँच गइले ।

"अरे, अब पानी पीये क टाइम कहाँ बा ?'

थोड़ा लजात मत्तन कहलस "कुछ ना, तनी थकावट....."

"दुपहरिया में तक मरसेटा खइले होइबे ?"

"कुछ नइखी खइले ।"

"काहे ?"

"घर में कुछ रहले ना रहे ।"

"अच्छा तनी काम करेवालन के मजूरी दे दे ।"

मजूरी बाँटत-बाँटत अउर साँझ हो गइल ।

चाक्को के प्रार्थना के समय रहे । मत्तन देह तक सीधा ना क सकल रहे । ओकर मन दोचित रहे । सिर खजुआवत मत्तन चाक्को के पीछे-पीछे चले लागल ।

"का तोरा जाये के नइखे का ?"

"कुछ धान....."

"चावल ! केकरा खातिर ?''

"लइकन खातिर घर में कुछो नइखे ।"

"हम तनी प्रार्थना क के आवत बानी ।"

मत्तन सोंचलस कि ओकरा छव सेर धान माँगे के चाही । चार सेर मजूरी के रूप में आ दूसेर आज के भोजन खातिर ।

अबहीं केहू के पाले पहुँचावे खातिर मत्तन के जाये के बा बाकिर अब ओकरा देह में ताकत नइखे रह गइल । लोग के कहनाम बा कि अब ऊ कवनो काम लायेक नइखे रह गइल ।

मत्तन लोगन के आगे हाथ जोड़ के कहत फिरे–"हमरा के काम पर बुलाई ।"

काम खातिर जब लोगन के केहू ना मिले तब लोग मत्तन के बोलावे । अब ओकरा के मजूरियो दिहल भार बुझात रहे । एकरा बादो ऊ लोगन से हिसाब माँगत चाक्को के घरे मत्तन के करे जुगुत बहुते छोट-छोट काम रहे । जब कहीं काम ना मिले त ऊ ओहिजे चल जाला। काम निपटवला के बाद चार सेर धान माँग लेवे । एही तरे ओकर दिन कटत रहे बाकिर अइसन दिन करला से का फायदा ? कपड़ा पेन्हे के बा तेल लगाने के बा । गिरिजाघर में चंदा देवे के बा, बाटिन के पढ़ावे के बा, ई सब चाक्कोचन के मदद से चल रहल बा। एकरा अलावे घर के कवनो आदमी के बेकारी-हेमारी में टहल-टिकोरा खातिर मत्तन के बोलावल जाय। अगर मत्तन ना होइत त का होइत ?

"हमहूँ इहे सोचत बानी ।"

"हं, का करि आदमी ?"

चाक्कोचन मत्तन खातिर देवता बन गइल रहले । कतना दयालु आ भगवान के भगत बाड़न ।

मत्तन के सपना बेटी के सुंदर रूप देवे के रहे । ओकनी के जीवन-संघर्ष के अनुमान ओकनी के काम देख के लाग जात रहे । बच्चा जनमला के बाद हाथ-पैर हिलावत उठत-गिरत, बकोइयाँ चलत बड़ हो गइले स । बेटी सब धीरे-धीरे सेयान हो गइली स । अब अ स्कूल जाये लागल रहीस ।

आतने ना, ओकनी के जिनिगी के साथ साले एगो हिसाब अउर बढ़त जात रहे जे जिनिगी भर ना मिटे वाला रहे । जवन ओकरा मन में रहे । दिन प दिन हिसाब बढ़त रहे। मत्तन चाक्को के हाथ में रोज कुछ ना कुछ धाती सऊँपत रहे । ऊ रुपया बढ़त-बढ़त नब्बे रोपेया ले हो गइल रहे ।

रोज साँझ के दुनो मरद-मेहरारू बतिआवस-"आखिर हमनी के एकनिये खातिर नूँ सब सहत बानीं ।" आ हिसाब किताब जोड़स ।

मेहरारू पूछस -"कतन रोपेया देला प एगो साधारण वर मिल जाई ?",

"दस हजार आना रहला पर अइसन बर मिल जाई जेकरा पाले रहे खातिर आपन घरो होई।"

ऊ पूछे-"अतना पइसा जमा करे में कतना दिन लागी ?"

एह तरह से ओकनी के दिन कटत रहे । आ ऊ पइसा एकटठा करत रहले से । इहे विचार ओकनी के खुशी से भर देत रहे । भूखे पेट सूतलो प ओकनी के कवनो गम ना रहत रहे । ओकनी के मन हमेशा ई सोच के खुश रहत रहे कि नेटिन के बियाह खातिर ऊ पइसा एकटठा करत रहे ।

मत्तन के खुशी भरल चेहरा गाँव में जग-जाहिर रहे ।

त्रेसा रोज बाप-मतारी के बतकही सुनत रहे । रोज-रोज पइसा बढ़त रहे । कबो-कबो हिसाब जोड़े में गलती होखे । त्रेसा ई जानला के बादो कि हिसाब गलत बा कबो कुछ ना कहत रहे । ओकरा मुँह से कवनो शब्द ना निकले । आखिर ऊहो त औरते बिया ।

एह सबके बादो त्रेसा के भीतरे स्वाभिमान आ धीरज बा । ओकरा स्थिति अतना खराब नइखे । मछली वाला तोमा के बेटी एक दिन कहत रहे कि ऊ गरीब बाड़ीस ।

त्रेसा कहलस-"हमनी गरीब भइला के बादो गरीब नइखी स ।"

ओकरा बात बिना समझले चाक्को के बेटी हँस देलस । त्रेसा जोश में फेरू उहे बात दोहरवलस ।

हँ, त्रेसे ओकर अर्थ बूझेले । दोसरा के ई बात ना समझ में आई ।

एक दिन दुपहरिया में त्रेसा अपना सहेलियन के साथे स्कूल के सामने खेलत रहे तबे बैंड-बाजा के आवाज सुनाई पड़ल । आवाज सुनके ऊ घर के ओर धउरल । एगो बियाह के जुलूस रहे । ऊ सब बिआह क के लवटत रहलन स । मारिया ओकनी के जानत रहे। ऊ बतवलस

कि "ओकरा घर के बगल में रहेवाला अला बाड़न । आ ऊ लड़िका आविच्चेरि के बा ।" कनिया ओकरा आर देखलस । देख के ऊ हँस देलस ।

त्रेसा पूछलस–"दहेज कतना मिलल बा ।"

"हमरा नइखे मालूम ।" मारिया जबाब देलस ।

त्रेसा बियाह के जुलूस देख के मूरत अइसन ठाड़ रहे । ओकरा मन में विचारन के आन्ही चलत रहे । अ अपने आप में खो गइल रहे । अगल-बगल में का होत बा ओह सबसे बेखबर। पता ना ओकरा मन के हिरण कहाँ-कहाँ धउरत रहे ।

ओकर सब सखी जा चुकल रही स । थोड़ा दूर आगे गइला प मारिय धूम के पीछे देखलस आ त्रेसा के आवाज देलस । आवाज सुन के त्रेसा के ध्यान टूटल । ऊ धउरत अपना सहेलियन के पास पहुँच गइल । ओकर एगो सखी टिहोका लेलस–"ओहिजा खड़ा-खड़ा अपना बियाह के सपना देखत रहू का ?"

दोसर की पूछलस–"र कहाँ के ह ?"

तीसर की पूछलस–"दहेज कतना मिलल हईस ।"

ABDIEL SOLU ABSC

त्रेसा के मन खिसिया गइल । अ अपना सखी सब प गुस्सा गइल । एह प सखी सब हँसे लगली स ।

त्रेसा कहलस–"हँसत काहे बाड़ू लोग । हमार भाई-बाबू हमरो खातिर दहेज एकट्ठा करेला लोग ।" अतना कह के ऊ ओहिजा से चल गइल ।

कुछ साल अउर बीतल । मत्तन के हिसाब काफी बढ़ गइल रहे । ओकरे साथे त्रेसो जवान हो गइल रहे । अब ऊ भरपूर औरत बन गइल रहे । अब बेटी के बराबर लइकिन के बाप के परेशान देख के मत्तन के भीतरे खुशी लहर मारे । ओकरा बेटी के अच्छा घर-वर मिली ।

जब दूनो मरद-मेहरारू हिसाब करे बइठस त त्रेसा के मन में लड्डू फूटे । ओकरा खातिर कहीं एगो राजकुमार बइठल होई । कइसन होई ? का करत होई ? कुरता आ टोपी पेन्ह के ओकरा गरदन में मंगल-सूत्र पहिरावे वाला के छवि ओकरा मन में आवत जात रहे। .....ससुराल.... ! कइसन होई घर ? घर आ जमीन उनके होई नूँ । ऊ खूब प्यार करी । सेवा करी..... आ बदला में उनकर प्यार मिली । उहो माँ बनी ।

त्रेसा इहे कुल्हि सोचत रहे । जब अनजान मरद ओकरा के जगाई तब ऊ लजा जाई।

कवना उमिर में हमार बिआह होई ? सोलह साल में बियाहल कईगा साखियन के इयाद ओकरा आइल । ऊ सतरह बरिस के भइल । हमरा उमिर के बारे में बाबू के साइद ठीक से ना मालूम होई, बाकिर माई त ठीक-ठीक जानेले ।

एक दिन मारिय मत्तन से कहलस–"अइसे बइठला से काम ना चली । बेटी के सतरहवाँ चल रहल बा ।"

"हूँ ।" त्रेसा लम्हर साँस खींचलस । मत्तन कहलस–"हमरा ध्यान में बा । अच्छा लइका खोजे के बा ? भले चार पइसा जादे लागे ?"

कुछ दिन के बाद मत्तन पाले गइल । लवटल त मेहरारू के बतवलस–"लइका मिल गइल बा । बीस बरिस के गबरू जवान बा । बीड़ी तक ना पीये । बाप-मतारी के एकलउता बेटा बा । अउर त अउर ओकरा पाले एक एकड़ जमीनो बा । अगिला एतवार के लइकी देखे अइहनस ।"

"का देवे के बा ?"–मारिया पूछलस ।

"पाँच हजार आना ।"

त्रेसा अपना मन के आँख से ससुरा के घर आ जमीन के देखलस । उनकर माई-बाबू होइहें । उनका साथे जिनिगी आराम से कटी ।

अगिला एतवार के ऊ लइकी देखे अइलन स । ऊहो अपना होखेवाला मरद के देखलस। लइको ओकरा के देखलस । त्रेसा खुशी में फूल के कुप्पा हो गइल ।

बियाह तय हो गइल । दहेज तय भइल पाँच हजार आना । बियाह के दिनो धरा गइल । गिरिजाघर के पादरिया तारीख के ऐलान कइलस । त्रेसा के बाबू अगिला एतवार के दहेज पहुँचाके के वादा कइले ।

त्रेसा के मन में लड्डू फूटल रहे । ओकर सखी सब मजाक करे लगली स । बियहलखी सब आपन-आपन अनुभव सुनावस । उहो दिन गिने लागल रहे ।

दूनो मरद-मेहरारू बइठ के हिसाब लगावत रहले । दहेज, बियाह आदि के बादो कुछ पइसा बाँचे के चाही । आखिर रोसो खातिर त पइसा चाही ।

पाले जाये कि दून पहिले मारिया बगल के घर से लौट के बतवलस कि "चाक्कोच्चन आया है ।"

"चाक्कोचन आया है । काल्ह सबेरे ऊ बाजार जाई । ओकरा पहिले कोट्टयम जाई। आजे रोपेया ले आके रख ली ।"

"ई कइसे । एतवार के ओकर मेला बा ।"

"ओकर इंतजाम करे के बा ।" मत्तन पीछे के घर में गइल । मत्तन के देखके चाक्को मुस्काइल ।

"बुझत बा, सब इंतजाम हो गइल ।"

"हँ । ऊ हाँ से आथे इन्तजाम पूरा हो जाये कि उम्मेद बा ।"

"दहेज कतना देबे के बा ?"

"पाँच हजार आना ।"

"तब त सब खरचा मिल के सात हजार लाग जाई ।"

मत्तन कुछ कहलस ना खाली हँसत रहल ।....

चाक्कोच्चन लइका के बारे में पूछलस ।

मत्तन सबकुछ फरिया के बतवलस ।

"पइसा कहाँ से आई । कहीं गाड़ के रखले बाड़े का ?"

मत्तन सुनके भकुआ गइल । ई ओकरा जिनिगी के पहिला सदमा रहे। ऊ भकुआइल खड़ा रहे । मुँह से बकार तक ना निकलल ।

"इहाँ थोरकी-थोरकी दिहल पइसा.... ।" एकरा आगे ऊ कुछ ना कह सकल।

"थोरकी-थोरकी दिहल पइसा ?" चाक्को पूछलन । चाक्को के आवाज मत्तन के कान में गरम सीसा अइसन सन्न से घुस गइल ।

चाक्को कहले—"सबकर हिसाब हमरा पाले बा । तोर लेल आ पहिले के बाकी दू रोपेया यानि कुल सतरह रोपेया तोरा देबे के बा अबहीं ।"

"हम ले ले बानी ।"

"हँ ।"

"हम.... हम त मेहनत मजूरी क के..... ।"

"तूँ एहिना काम कइले । भगवान प भरोसा कवेवाला कवन धर्मात्मा तोरा से काम करवाई । बोका कहीं का ।"

"हम पत्ता काटली..... । गाय के देखभाल कइली ।"

चाक्को ठठा के हँसल ।

"ओकर मजूरी ।" मत्तन माथा थ के बइठ गइल ।

चाक्को कहलस–"लइका के भाग ठीक होई त सब ठीक होई । हमहूँ पनरह रोपेया देब । भगवान सब जानत बाड़न ।"

दू-तीन गो बड़का लोग आ पुरोहित घाट पर अइल । चाक्को आग बढ़ के स्वागत कइलस।

रात गहरा गइल रहे । मत्तन के घर के दीया बुता गइल रहे । आबादी ले ऊ लवटल ना रहे ।

दीया बुतइला के बादो मतारी-बेटी पड़ा हेरत रही ।

दोसरा दिने मारिया तरपुरा गइल । कुछ लोग ओकरा के देखबो कइल बाकिर कुछ कहल ना ।

मत्तन दोसरो दिन ना आइल । अरधुरम में जनम दिन के धूमधाम रहे ।

दोसरा दिने एतवार रहे । चाक्को के मेला लागल रहे । एगो लाश घाट पर आके लागल बा । हाथ-गोड़ रस्सी से बान्हल रहे । ऊ मत्तने होई । मेला के चारो दिशा से चाक्को के ईश्वर भक्ति के तारीफ के आवाज गूँजत रहे । आ मत्तन से लिपट के रोवत माई-बेटी के आवाज ओह गूँज में कहीं गुम हो गइल रहे ।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. "बाबूजी ना अइहें त हमनी खाना कइसे खाईब ।" ई के कब आ केकरा से कहले बा ?
2. मत्तन कवन काम करत रहल ?
3. त्रेसा आ मत्तन के बीचे कवन रिश्ता बा ?
4. चाक्को मत्तन के के रहले ?
5. **"दस पइसा जादहीं देब त बरो अच्छा मिली ।' – ई कथन केकर ह ?**

   (क) मारिया (ख) त्रेसा

   (ग) चाक्को (घ) रोसा
6. **"तब त सब खरचा मिला के सात हजार लाग जाई ।" केकर कहल बा ?**

   (क) मत्तन (ख) चाक्को

   (ग) त्रेसा (घ) मारिया

ABSOL SOLUTIONS PATNA

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. त्रेसा काहे खाना ना खात रहे ?
2. त्रेसा आ ओकर सखी सब बारात जात देख के का कहली ।
3. चाक्को दहेज के सुन के मत्तन के का कहले रहले ?
4. 'मत्तन के कहानी' पढ़ला के बाद मन में कवन भाव पैदा होत बा ।
5. मत्तन भोरे-भोरे अरच्चरा काहे खातिर गइलं रहे ।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'मत्तन के कहानी' से का शिक्षा मिलत बा ?

2. कहानी के सारांश लिखीं ।

3. मत्तन के चरित्र-चित्रण करीं ।

सप्रसंग व्याख्या

1. "जब दूनो मरद मेहरारू हिसाब करे बइठस त त्रेसा के मन में लड्डू फूटे ।"

2. "ई ओकरा जिनगी के पहिला सदमा रहे । उ भकुआइल खड़ा रहे । मुँह से बकार तक ना निकलल ।"

परियोजना कार्य

1. कवनो दोसर पढ़ल आ सुनल कहानी लिखीं जवना में गरीब के शोषण कइल गइल होखे।

2. अपना गाँव के चाक्को अइसन मातवर आदमी के चुन के ओकर चरित्र-चित्रण करीं।

3. एह कहानी में आइल कथावस्तु के अपना भाषा में लिखी ।

4. अपना गाँव आ अगल-बगल में घटल घटना जे मत्तन के कहानी से मिलत-जुलत होखे ओकरा के अपना भाषा में लिखीं ।

5. कवनो भोजपुरी गद्य रचना के हिंदी भा अंग्रेजी में अनुवाद करीं ।

शब्द-भंडार

अहुआइल	–	अऊधाइल
आँख टिका के	–	कुछ देर एके जगह आँख स्थिर कके ध्यान से देखल
बड़बड़ाइल	–	कुछ-कुछ अंट-संट बोलल ।
बुतायेवाला	–	बुझाए वाला
अबूझ	–	जे न बूझल जा सके
दीया	–	जेकरा तेल बाती राख के जरावल जाला दीपक
पोटली	–	छोट गठरी

बोरसी	–	जवना बरतन में आगि सुलगावल जाला
पड़ोसिया	–	पड़ोस के रहे वाला
एकांता	–	जहाँ सुनसान रहे, अकेला में
मेहरारू	–	पत्नी, औरत
चरी	–	माल मवेशी के हरियरी खाना भा चरल
मजूरी	–	मेहनत के मजदूरी
पेड़ा	–	रास्ता
बकोइया	–	हाथ पैर के सहारे सरक के चलल
थाती	–	जोगा के रखल चीज

पाठेत्तर सामग्री

टोक बंदोबस्ती के रह हीले के खबर जब बबुआन टोला से होत नगेसर सिंह के दुआर प पहुँचल त साँझ अँगना में उतर चुकल रहे । कउड़ा के धुआँ गवे गँवे ऊपर आकास का ओर उठे लागल रहे । नगेसर सिंह के खीस कउड़ा से उठत आग के लहर अइसन लहोक लेत रहे बाकिर बाबा के नाँव सुनते मातर ऊ मदारी के साँप अइसन फन सिकुड़ा के मुड़ी नीचे गोत ले ले आ बुदबुदइले.... समय अइला प सब लोग के देख लेब । बात आइल-गइल हो गइल । बाकिर नगेसर सिंह के करेजा के आग त बोरसी के आग अइसन सुनुगत रहे। कए बेरा रायबहादुर के लोभ-लालच के साथे-साथे, ई निमन ना भइल हा, एकर रिजल्ट बड़ा खराब होई, जइसन धमकियो देल गइल, बाकिर उ टस से मस ना भइलन । नगेसरो सिंह हार माने वाला जीव ना रहस । तैमूर लंग अइसन किरिया खा के अपना लक्ष्य के प्राप्ति में लागल रहलन ।

बाबा के समाधि के समाचार सुन के पूरा जवार स्तब्ध रहे । कुछ लोग भीतरे-भीतरे खुब खुश रहे बाकिर सामाजिक भय से खुल के सामने ना आवत रहे । बाकिर ई सब जादे दिन ले ना चल पावल । खुल के त केहू विरोध ना कइल बाकिर खुसुर-फुसुर शुरू हो गइल रहे। अफवाह हवा में उठे आ शांत हो जाय । गाँव के चौराहा तक ले बंटा गइल रहे।

बबुआन टोला के लोग भीतरे-भीतरे अपमान के अग्निकुंड में जरत रहे। बदला लेवे के कतना उपाय सोचल जाय, बाकिर हवा गरम देख के सामने आवे के हिम्मत केहू के ना करत रहे। नगेसर सिंह के दलान प रोज जमवड़ा जुटे। गाँजा के चिलम भोले बाबा ले नाँव प लहके आ ओकरे साथे बहसो के बाजार गरम हो जात रहे। हमला करे के योजना बन आ टूट आ कवनो एकमत राह ना निकल पइला से जमवड़ा अगिला दिन खातिर टूट जात रहे। नगेसर सिंह के इच्छा रहे कि चुपचाप राते में कब्जा क लेल जाय। बाद में कोर्ट-कचहरी होई त देख लेल जाई। बाकी रिपुदमन के विचार ठीक उल्टा रहे। उनका राय में चुपचुप कब्जा ना बात कायरता के निशानी रहे। ऊ कहस जब जमीन हमनी के गाँवे बा त डर कइसन। हमनी आह प कब्जा करब दिन में सभके सामने। बहादुर अइसन। चोर अइसन ना।

जवान लोग रिपुदमन के विचार के समर्थक रहे। ओह लोग के बाँह फड़कत रहे। रोम में गरम-गरम खून उबाल लेत रहे। बूढ़न के राय रहे—बात के कवनो बीच के राह से हल निकालल जाय। छोट लोग के मुँह लगवला से आपन बदनामी बा। खून-खराबा भइला से गाँव-जवार सब के बदनामी होई। थाना-कचहरी होई से अलगे आपसी रिश्ता खराब होई। अगर जबरदस्ती कब्जा ना हो सकल त मुँहकरखी लाग जाई। एही कुछ बातन के बीच जमोड़ा अगिला दिन खातिर टूट जाय। फैसला कुछ न हो पावत रहे। उहे ढाक के तीन पात।

बबुआन टोला के बात हवा में उड़त पहिले गाँव के एक टोला से होत दोसरा टोला पहुँचे आ फेरू अवार-जवार में पसर जाय। टोक के सुरक्षा खातिर एनियो सभा हाथ लगल रहे। अगल-बगल के गाँव के लोगन के आवा जाही बढ़ गइल रहे। सबलोग से बात-विचार क के तय कइल गइल कि ई पता लगावत रहल जाव कि ऊ लोग टोक प कब कब्जा करे के प्लान बनावत बा। आ फेरू सब कुछ पहिलहीं जइसन चले लागल रहे। साथ साथे काली दी के उपदेशो चलत रहत रहे। उनकर उपदेश चरवाहन के पोखता बना देले रहे। देखे में सोझबक लागे वाला चरवाहा सब अपना धुन के पक्का रहल स।

एक दिन किसुनवा टोक प अपना भइसन के साथे पहुँचल त देखलस कि नगेसर सिंह के लइका अपना बिरादरी के कुछ लोफरन के संगे टोक प घूमत बड़ुए। साथ-साथ पेड़न से फलो तूरत रहे। आ चरवाह सब के डाँटत रहे कि ऊ सब अब एहिजा आपन गाय भइंस चरावे मत अइहन स।

ओकर बात सुन के फुलेसरी कहलस—"बड़ा बगइचा वाला बनल बाड़ । हमनी के कहो ना जाइब। आपन गोरू एहीजे चराइब। देखत बानी, कवन भोंडकदस रोकत बा।"

–''ए छोकरी, जादे बकर बकर मत कर । ना त पूरा डंटा.....

–''नतीऊ, जादे बोलब त मुड़िये छंवड़ देब ।'' कहत फुलेसरी डाँड़ में से हँसुआ निकाल के झपटल । तले गनेसवा, मंगरा, परबतिया, महँगुआ ब धउरल ओहीजा पहुँच गइलन स।

बाबूजी आफिस से लवटले त तेल के एगो बोतल लेले अइले । माई देखली त अहनरि क कहली बड़ा नीक कइलीं हाँ । ठंढा तेल कहिए से घर में ना रहे । कपार बथला पर बी. डी. ओ. साहेब के मेहरारू किहाँ माँगे जाये के परत रहे ।'

बाबूजी कुछुओ ना बोलले आ माई लफि के तेल के बोतल बाबूजी के हाथ से थाम्हि लिहली । बाबूजी खटिया पर ओठंघि गइले । तनी देर भइल त बाबूजी कहले, ''का हो ? चाहो पानी मिली कि ठंढे तेल बोथाई कपार पर ?''

माई तेल के बोतल आलमारी में सहेजि देले रहली आ रसोई घर में चलि गइली। तुरंते चाह के गरम-गरम गिलास बाबूजी के हाथ में पहुँचि गइल । ऊ नान्हे-नान्ह घोंट भरत चाह पिये लगले । माई खड़ा होके निरेखत रहली । उनुका बुझात रहे जे बाबूजी थाकल बाड़े।

माई कहनी, 'बुझात बा कि रउबा हरानी हो गइल बा । तनी सरकीं त तेलवा चानी पर रगरि दीं । मन कबजा में आ जाई ।'

बाबूजी में कवनो उत्साह ना उभरल । ऊ ओइसहीं ओठंघले कहले–''रहे द । ऊ त खिजाब ह, बार करिआ करेवाला तेल ।''

''एह उमरी खिजाब लगाबल जाई ? बूढ़ घोड़ी के लाल लगाम ।''–माई कहली । बाबूजी दबकि के चुपाइले रहले । माई रसोई घर में समा गइली ।

अभ्यास

1. बबुआन टोला के लोग कवना बात पर तमतमाइल रहे ?
2. केकरा समाधि के बात सुन के जवार के लोग स्तब्ध रहे ?
3. टोक प भईस चरावे के पहुँचल रहे ।
4. केकर बात सुनके फुलेसरी खिसिआइल रहे ?

5. तेल के बोतल देख के माई काहे खुश हो गइली ?

6. "का हो ? चाहो पानी मिली कि ठंढे तेल बोबाई कपार पर'' ई केकर कथन ह ?

7. माई बाबूजी के थाकल जान के जब ठंढा तेल लगावे के प्रस्ताव रखली त ऊ काहे उत्साह हीन बनल रहलन ?

8. खिजाब का कहाला ? बाबूजी खिजाब काहे खातिर खरीद के ले आइल रहन ?

9. "एह उमरी खिजाब लगावल जाई'' इ बात माई काहे कहली ?

10. ''बूढ घोड़ी लाल लगाम'' के अर्थ स्पष्ट करीं ।

11. बाबूजी के दबकि के चुपइल पर माई रसोईघर में काहे समा गइली ?

शब्द-भंडार

बंदोबस्ती – खेत आदि के केहु के नाम लिखके सरकारी मोहर लागल ।

कउड़ा – घुरा, जंगल झाड़ बटोर के ढेर क के जलावल

लहोक – लहास

करसी – गाय-बैल के सूखल मल

किरिया – कसम

जमवड़ा – एकट्ठा भइल

गुपचुप – चुपे-चुपे

सोझबक – सीधा

छेपेड़ल – काटल